॥ श्रीरामदूताय नमः ॥

श्री हनुमान चालीसा

सम्पूर्ण पाठ • सरल, स्वच्छ और प्रति-अनुकूल प्रस्तुति

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
शंकर सुवन केसरी नंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥

विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे॥

लाय सजीवन लखन जियाए। श्रीरघुबीर हरषि उर लाए॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥

जम कुबेर दगिपाल जहाँ ते। कबि कोबदि कहि सिके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मलिाय राज पद दीन्हा॥

तुम्हरो मंत्र बभिीषण माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रकिा मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गिए अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बनि पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना॥

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
भूत पशिाच नकिट नहि आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत नरितर हनुमत बीरा॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तनि के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमति जीवन फल पावै॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसद्धि जगत उजयिारा॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर नकिंदन राम दुलारे॥

अष्ट सद्धि नौ नधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बसिरावै॥
अंतकाल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरभिक्त कहाई॥

और देवता चत्ति न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥
संकट कटै मटिै सब पीरा। जो सुमरै हनुमत बलबीरा॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सद्धि साखी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहति, हृदय बसहु सुर भूप॥

पाठ श्रद्धा और सद्भाव से प्रस्तुत है। विभिन्न प्रचलित प्रतियों में वर्तनी या पाठ-भेद मिल सकते हैं। किसी निश्चित फल या उपचार की गारंटी नहीं है।